भगवतीसूत्र भा. ३ तीसरेकी विषयानुक्रमणिका

तीसरा शतक उद्देशा पहेला

१	प्रथम उद्देशेका संक्षिप्तविषय विवरण	१—५
२	मोकानगरी में वीर भगवान्का समवसरण	६–१६
३	चमरके विषयमें दूसरे गणधर अग्निभूतिका प्रश्न	१७
४	गौतमके प्रति भगवान्का उत्तर	१८–२७
५	सामानिकदेवर्द्धिके विषयमें गौतमका प्रश्न	२८–२९
६	सामानिकदेवर्द्धिके विषयमें भगवानका उत्तर	३०–३८
७	त्रायस्त्रिंशकदेव के ऋद्धि और विकुर्वणा शक्तिका निरूपण	३९–४५
८	अग्निभूतिका वायुभूतिके प्रति चमरेन्द्रकी ऋद्धिके स्वरूपका वर्णन	४७–५५
९	अग्निभूतिके कथनका भगवानका समर्थन	५६–६०
१०	बालीन्द्रके ऋद्धिविषयमें वायुभूतिका प्रश्न	६१–६५
११	नागराजधरणेन्द्रकी ऋद्धि विकुर्वणाशक्ति आदिका निरूपण	६६–७८
१२	देवराज शक्रेन्द्रके ऋद्धि आदिका निरूपण	७९–८६
१३	तिष्यनामके सामानिक देवकी ऋद्धि आदिका वर्णन	८७–१०१
१४	तिष्यक अनगारके विषयमें भगवानका उत्तर	१०२–११२
१५	ईशानेन्द्रकी विकुर्वणाका निरूपण	११३–१२३
१६	कुरुदत्त अनगारके स्वरूपका निरूपण	१२४–१३४
१७	सनत्कुमारदेवकी ऋद्धि आदिका निरूपण	१३५–१५१
१८	ईशानेन्द्रकी दिव्य देवऋद्धिका वर्णन	१५२–१६४
१९	ईशानेन्द्रके पूर्वभवका वर्णन	१६५–१६७
२०	ईशानेन्द्रके ऋद्धिकी प्राप्तिके कारणका निरूपण	१६८–१९८
२१	ताम्रलिप्त तापसद्वारा स्वीकृत प्राणामिकी प्रव्रज्याकी महत्ता दिका निरूपण	१९९–२०४
२२	तामलीकृत पादपोपगमनसंथारेका निरूपण	२०५–२१८
२३	बलिचंचाराजधानीमें स्थित देवादिकी परिस्थितिका निरूपण	२१९–२४२
२४	बलिचंचाराजधानीके निवासी देवोंने तामली तापसको कालगत जानकर उनके शरीरकी विडम्बना आदिका वर्णन	२४३–२५७

२५ ईशानेन्द्र के कोपके स्वरूपका वर्णन २५८-२७२
२६ ईशानेन्द्रकी स्थितिका निरूपण २७३-
२७ ईशानेन्द्र और शक्रेन्द्रके गमनागमन आदिका निरूपण २७४-२९६
२८ सनत्कुमार भवसिद्धिक है कि अभवसिद्धिक आदि विषयमें प्रश्नोत्तरका निरूपण २९७-३०८

दूसरा उद्देशा

२९ दूसरे उद्देशेका संक्षिप्तविषयोंका विवरण ३०९-३१४
३० भगवानका समवसरण और चमरेन्द्रका निरूपण ३१५-३४५
३१ असुरकुमार देवोंकी उत्पातक्रियाका वर्णन ३४५-३५८
३२ चमरेन्द्रके पूर्वभव जाति प्रव्रज्या, और पादपोपगमन संथारेका निरूपण ३५८-३७५
३३ शक्रेन्द्रके प्रति चमरेन्द्रकी उत्पातक्रियाका निरूपण ३७६-४२८
३४ शक्रके द्वारा वज्रका छोडना और चमरका भगवान के शरणमें आनेका निरूपण ४२९-४४०
३५ शक्रेन्द्रके विचार आदिका निरूपण ४४१-४६०
३६ देवोंके पुद्गलप्रक्षेपप्रतिसंहरण शक्तिके कथनपूर्वक ऊपरकी ओर और नीचेकी ओर गमनशक्तिका निरूपण ४६१-४७५
३७ शक्रेन्द्र और चमरेन्द्रके गतिके स्वरूपका निरूपण ४७६-४९४
३८ महावीरस्वामीके प्रति चमरेन्द्रका क्षमा प्रार्थना आदिका निरूपण ४९५-५११
३९ असुरकुमारके सौधर्मकल्पपर्यन्त ऊर्ध्व गमनके स्वरूपका निरूपण ५१२-५२०

तीसरा उद्देशेका प्रारंभ

४० तीसरे उद्देशेका संक्षिप्त विषयोंका विवरण ५२१-५२२
४१ क्रियाके स्वरूपका निरूपण ५२३-५३५
४२ क्रिया वेदनके स्वरूपका निरूपण ५३६-५४२
४३ जीवोंके एजनादि क्रियाका निरूपण ५४३-५८३

४४ प्रमत्त और अप्रमत्त संयतोके स्वरूपका कथन ५८७–५९०
४५ लवण समुद्रके जल-उपचय और अपचय (घटबढ) होनेमें कारणका निरूपण ५९१–५९४

चौथा उद्देशा

४६ चतुर्थ उद्देशकका विषयनिरूपण ५९५–५९८
४७ क्रियाके विचित्र प्रकारके ज्ञानविशेषका निरूपण ५९९–६१४
४८ वैक्रियवायुकायके स्वरूपका निरूपण ६१६–६२५
४९ परिणमिक–बलाहक मेघके स्वरूपका वर्णन ६२६–६३४
५० जीवके परलोकगमनके स्वरूपका कथन ६३५–६४७
५१ अनगारके विकुर्वणाके स्वरूपका निरूपण ६४८–६६६

पांचवा उद्देशा

५२ पांचवे उद्देशकका संक्षिप्त विषय कथन ६६७–६६८
५३ विकुर्वणा विशेषवक्तव्यताका निरूपण ६६९–६९७
५४ अभियोग्य और आभियोगिकके स्वरूपका वर्णन ६९८–७१४

छट्ठा उद्देशक

५५ छट्ठे उद्देशकके विषयोंका संक्षेपका कथन ७१५–७१६
५६ मिथ्यादृष्टि अनगारके विशेष विकुर्वणाके स्वरूपका निरूपण ७१७–७३४
५७ अमायि अनगारकी विकुर्वणा विशेषका वर्णन ७३५–७५३
५८ चमरके आत्मरक्षक देवोंकी विशेषवक्तव्यता ७५४–७६०

सातवां उद्देशा

५९ सातवे उद्देशेका संक्षिप्तविषयविवरण ७६१–७६२
६० शक्रके सोमादि लोकपालके स्वरूपका निरूपण ७६३–७९६
६१ यमनामक लोकपालके स्वरूपका निरूपण ७९७–८१८
६२ वरुणनामक लोकपालके स्वरूपका निरूपण ८१९–८३०
६३ वैश्रमण नामक लोकपालके स्वरूपका निरूपण ८३१–८५०

आठवा उद्देशा

६४ आठवे उद्देशकके विषयोंका संक्षिप्तसे निरूपण ८५१
६५ भवनपति आदि देवोंके स्वरूपका निरूपण ८५२–८७४

नववां उद्देशा

६६ इन्द्रियोंके विषयोंका निरूपण ८७५–८८०

दशवां उद्देशक

६७ देवोंकी सभाका वर्णन ८८१–८८७

चौथा शतकके १–८ उद्देशक

६८ देवोंके विमान राजधानी आदिका निरूपण ८८८–९०४

नववां उद्देशक

६९ नारकोंके स्वरूपका वर्णन ९०५–९०८

दशवा उद्देशक

७० लेश्याओंके परिणामका निरूपण ९०९–९१९

*